अन्य आकर्षण

अक्षर हाट

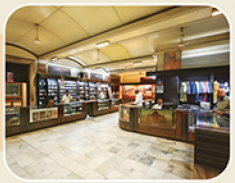

विविध भाषाओं में संस्कार प्रेरक धार्मिक साहित्य, भक्तिभाव प्रकटकरता ऑडियो-विडीयो प्रकाशन, व्यूकार्डस्, स्मरणिकाएँ, स्नेहियों को भेंट देने योग्य स्मृति चिह्न, अमृत हर्बल केयर औषधियाँ तथा पूजा सामग्री आप यहाँ से प्राप्त कर सकते हैं ।

प्रेमवती आहार गृह

प्रेमवती आहार गृह में स्वादिष्ट शाकाहारी व्यंजन तथा पेय उपलब्ध हैं। यहाँ उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत के स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ ही गुजराती व्यंजन, जैसे खमण, स्वामिनारायण खिचडी आदि उपलब्ध हैं ।

प्रेरणामूर्ति एवं सर्जक

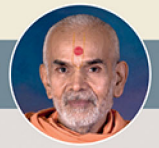

'प्रमुखस्वामी महाराज अर्थात् 'दूसरों की भलाई में ही अपना भला है...' जीवनसूत्र के साथ लाखों लोगों को सांत्वना प्रदान करनेवाले एक अद्वितीय संतविभूति ! भगवान श्रीस्वामिनारायण की गुणातीत गुरुपरंपरा के पाँचवें गुरुदेव, इन विश्ववंदनीय संत ने निर्व्याज वात्सल्य की वर्षा में आबालवृद्ध सभी को धन्य कर दिया था। बी.ए.पी.एस. संस्था की अनेक प्रकार की अंतर्राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के सूत्रधार स्वामीश्री ने कठिन पुरुषार्थ से एक विराट चरित्रवान समाज खड़ा किया है। 17 हजार से भी अधिक गाँवों में विचरण, 2 लाख 50 हजार से भी अधिक घरों की पधरावनी, 7 लाख से भी अधिक पत्रों का लेखन, करोड़ों से व्यक्तिगत मुलाकात आदि के द्वारा इन महान संत ने असंख्य लोगों के जीवन का उत्कर्ष किया है। अक्षरधाम जैसे विश्वविख्यात संस्कृति धाम के अतिरिक्त विश्वभर में 1,200 से भी अधिक मंदिरों का सर्जन करके, उन्होंने संस्कृति के चिरंतन स्मारकों की स्थापना की है। भारत और विश्व के अनेक देशों में अनेक प्राकृतिक आपदाओं में बर्बाद हो चुके लोगों के लिए इन करुणामूर्ति संत की करुणा प्रवाहित हुई है। असंख्य लोगों ने उनके सान्निध्य में परब्रह्म की दिव्य अनुभूति की है, उच्च आध्यात्मिक शिखर प्राप्त किया है।

वर्तमानकाल में प्रमुखस्वामी महाराज के आध्यात्मिक अनुगामी के रूप में बिराजमान महंत स्वामी महाराज एक पवित्र संतविभूति हैं। तप, व्रत, संयम, भक्ति, साधुता, विनम्रता, सरलता और बुद्धिमत्ता जैसे अनेक सद्गुणों से सम्पन्न महंत स्वामी महाराज, प्रमुखस्वामी महाराज के पदचिह्नों पर बी.ए.पी.एस. के असंख्य भक्तों-भाविकों को भगवान श्रीस्वामिनारायण द्वारा दिखलाए गए आध्यात्मिक मार्ग पर गति प्रदान कर रहे हैं।

संवाहक : बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था

स्वामिनारायण अक्षरधाम के निर्माण तथा संचालन का उत्तरदायित्व बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था ने निभाया है। संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा मान्यता प्राप्त यह संस्था एक अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक-आध्यात्मिक संस्था है। संस्था के 18,000 से भी अधिक सत्संग सभाकेन्द्र 1,000 से भी अधिक सुशिक्षित नवयुवक संत, 55,000 स्वयंसेवकों तथा लाखों हरिभक्तों का समुदाय शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आदि अनेक क्षेत्रों में सेवारत रहते हैं।

आवश्यक सूचनाएँ

परिसर का समय : मंगलवार से रविवार (प्रत्येक सोमवार को संपूर्ण बंद)

मंदिर दर्शन : प्रात: 9.30 से सायं 7.30 (नि:शुल्क)

- दर्शन
- स्वामिनारायण दर्शन
- प्रसादी मंडपम्

मंदिर-आरती : प्रात: 10:00 बजे और सायं 6:30 बजे
प्रदर्शनी : प्रवेश प्रात: 10:00 से सायं 5:30 (सशुल्क)
नीलकंठ अभिषेक मंडपम् : प्रात: 10:00 से सायं 7:00
चिल्ड्रन पार्क : दोपहर 12:00 से रात्रि 8:00 (सशुल्क)
सत्-चित्-आनंद वॉटर शो : प्रतिदिन सूर्यास्त के बाद (सशुल्क)
प्रेमवती आहार गृह : प्रात: 10:00 से रात्रि 8:30 (सशुल्क)
अनिवार्य परिस्थिति में पूर्व सूचना के बिना समय में परिवर्तन किया जा सकता है।

परिसर में सर्वथा निषिद्ध है

■ फोटोग्राफी-वीडियोग्राफी ■ मोबाईल फोन, कैमेरा, रेडियो, टैपरिकार्डर और किसी भी प्रकार का इलैक्ट्रोनिक उपकरण ■ बैग और अन्य सामान ■ बाहरी पेय और खाद्य सामग्री ■ धूम्रपान, मदिरापान, तम्बाकूसेवन, अन्य नशीली चीज़ें ■ असभ्य वस्त्र परिधान ■ नारे और असभ्य भाषा प्रयोग ■ पालतू प्राणी

असुविधा के लिए क्षमा करें।

भारतीय संस्कृति के इस परिसर में आपकी यह मुलाकात एक यात्रा है - पवित्र भावनाओं से छलकती दिव्य तीर्थ भूमि की, जो आपको दिव्य प्रेरणाओं से धन्य कर सकती है। कृपया इस तीर्थधाम की गरिमा को बनाए रखने में सहयोग दें।

परिसर में प्रवेश के लिए सभी अधिकार संचालनकर्ता के अधीन है।

स्वामिनारायण अक्षरधाम
जे.रोड, सेक्टर-20, गांधीनगर - 382021, गुजरात, भारत

फोन : + 91 - 99989998700 / 9998999800

www.akshardham.com/gujarat
www.baps.org

E-mails:gujarat@akshardham.com
watershow@akshardham.com

स्वामिनारायण

अक्षरधाम

गांधीनगर, गुजरात

संस्कृति-तीर्थ स्वामिनारायण अक्षरधाम
एक अद्वितीय परिसर है -
भारतीय कला, प्रज्ञा, चिंतन और मूल्यों का।
भारतीय संस्कृति के ज्योतिर्धर भगवान श्री स्वामिनारायण
(सन् 1781-1830) को यह समयातीत सर्जन समर्पित है।
संतविभूति प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा सन् 1992 में
निर्मित यह मनमोहक सांस्कृतिक परिसर,
23 एकड़ भूमि में फैला हुआ है।
शान्ति, सौंदर्य एवं दिव्यता के इस परिसर में
आपका हार्दिक स्वागत है।

मंदिर दर्शन

श्रीहरि चरणारविंद

मंदिर के प्रवेशद्वार पर 16 मांगलिक चिह्नों से अंकित ये श्री-हरि चरणारविंद इस धरा पर भगवान श्रीस्वामिनारायण के दिव्य अवतरण की स्मृति में स्थापित किये गये है। श्वेत संगमरमर से शिल्पांकित इस श्रीहरि-चरणारविंद पर चार शंखों द्वारा जलधाराओं का अभिषेक, भगवान श्रीस्वामिनारायण के ऐतिहासिक जीवन एवं कार्य के प्रति भावांजलि अर्पण करता है।

अक्षरधाम मंदिर

विशाल संकुल के मध्य भाग में गुलाबी पत्थरों से निर्मित भव्य अक्षरधाम मंदिर। इसकी ऊँचाइ 108 फूट, चौड़ाइ 131 फूट तथा लंबाई 240 फूट है; जिसमें खूबसूरत नक्काशी किए हुए 97 स्तंभ, 17 देदिप्यमान गुम्बद, 8 अलंकृत बरामदे तथा खूबसूरत ढंग से शिल्पांकित की गई 264 मूर्तियाँ हैं। प्राचीन भारतीय परंपरागत शैली में निर्मित, इस भव्य मंदिर के निर्माण में कहीं भी किसी भी रूप में लौह का उपयोग नहीं किया गया है। खूबसूरत उद्यानों एवं घास से हरे-भरे मैदानों से घिरे अक्षरधाम मंदिर को 514 मीटर लम्बी परिक्रमा चारों ओर से पुष्पहार की भाँति सुशोभित कर रही है।

हरिमण्डपम्

मंदिर का मध्यवर्ती कक्ष, हरिमण्डपम् के नाम से जाना जाता है। हरिमण्डपम् के मध्य में 7 फूट उँची भगवान श्रीस्वामिनारायण की स्वर्णमंडित मूर्ति नयनाभिराम है।

स्वामिनारायण दर्शन

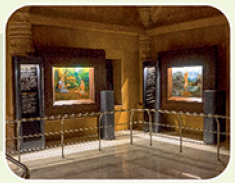

मंदिर का ऊपरी खण्ड है : 'स्वामिनारायण दर्शन'। सन् 1781 से सन् 1830 दौरान भगवान श्रीस्वामिनारायण ने इस पृथ्वी को अपने दिव्य सान्निध्य से पावन की थी। अपूर्व चित्रों के माध्यम से 'स्वामिनारायण दर्शन' उनके जीवन को पुनर्जीवित करता है।

प्रसादी मण्डपम्

मंदिर का निचला खण्ड प्रसादी मण्डपम् के नाम से जाना जाता है। यहाँ भगवान श्रीस्वामिनारायण के स्पर्श से चिरंतन दिव्यता प्राप्त प्रसादिक वस्तुओं का आकर्षक संग्रहालय है। अपनी प्रामाणिकता के कारण यह संग्रहालय श्रीहरि के इस पृथ्वी पर अवतरण का साक्ष्य है।

प्रदर्शनियाँ

खण्ड-1 तथा खण्ड-2 : नीलकंठ एवं सहजानंद — 45 मिनट

मूल्यों के खण्ड

यहाँ भगवान श्रीस्वामिनारायण के जीवन और कार्यों द्वारा ऐसे मूल्यों की हृदयस्पर्शी प्रस्तुति है, जिसे अपनाकर मनुष्य अपने जीवन का, अविनाशी सुख का शिल्प तराश सकता है। पल-पल में बदलते अद्यतन माध्यम दर्शक को अभिभूत करतें है।

खण्ड-3 : मिस्टिक इण्डिया — 45 मिनट

महाकाव्य सी फ़िल्म, जो दिलधड़क दृश्यों के साथ गाथा सुनाती है बालयोगी नीलकंठ की, जिन्होंने 7 वर्ष तक नंगे पैर 12,000 कि.मि. भारत की पदयात्रा की थी। इस फ़िल्म की शूटिंग 108 स्थलों पर की गई है, जिसमें 45,000 स्वयंसेवकों-कलाकारों ने भाग लिया था। सत्य घटना पर आधारित इस फ़िल्म में भारत के तीर्थों, उत्सवों, सांस्कृतिक परम्पराओं और उच्च मूल्यों को प्रस्तुत किया गया है।

खण्ड-4 : प्रेमानंद — 45 मिनट

आध्यात्मिक विरासत का खण्ड

यहाँ उपनिषद, रामायण और महाभारत के त्रिपारिमाणिक डायोरामा भारतीय संस्कृति के सनातन सत्य को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

विश्वधर्म संवादिता खण्ड

यहाँ विश्व के प्रमुख धर्मों के प्रतीक चिह्न, शास्त्र, तीर्थस्थलों, आचार संहिता एवं प्रार्थनाएँ आदि की सुंदरतम् प्रस्तुति द्वारा सर्वधर्म संवादिता की प्रेरणा मिलती है।

संत कवि

यहाँ पर आपको भारत के महान संतकवियों का परिचय दिया गया है।

खण्ड-5 : संत परम हितकारी — 15 मिनट

आध्यात्मिक प्रेरणा प्रदान करता एक अद्भुत ऑडियो-एनिमेट्रोनिक्स शो। 200 वर्ष पूर्व का वातावरण, घटनाएँ, पात्र आदि यहाँ जीवंत होते हैं और शाश्वत सुख के रहस्य को उद्घाटित करते हैं।

नीलकंठ अभिषेक मंडपम्

अभिषेक की भावनाएँ

जल अभिषेक विधि एक प्राचीन भारतीय परंपरा है, जो भगवान और महापुरुषों के प्रति श्रद्धापूर्ण आदरांजलि के रुप में है, जो सुख, शांति और मांगल्य प्राप्त करने के लिए की जाती है।

स्वामिनारायण अक्षरधाम मे अभिषेक

भारत में आज भी महिमामंडित उस प्राचीन परंपरा के अनुसार इस अभिषेक मंडपम् में तपोमूर्ति भगवान श्रीस्वामिनारायण अर्थात बालयोगी श्री नीलकंठवर्णी की मूर्ति पर पवित्र जल से विधिवत् श्रद्धापूर्ण अभिषेक किया जाता है।

अभिषेक प्रार्थनाएँ

इस पवित्र अभिषेकविधि से श्री नीलकंठवर्णी के तप, संयम, सेवा, निश्चलता, निर्भयता, नम्रता, प्रेम आदि शुभ गुणों से हम सभी के जीवन परिपूर्ण हो, और हम सभी की प्रार्थनाएँ, मंगल कामनाएँ परिपूर्ण हों, यही अभ्यर्थना।

Sat-Chit-Anand
WATERSHOW
firefountainslasersmantrasprojections

यहाँ है - **आश्चर्य ही आश्चर्य**

जहाँ पर **ज्वालाएँ जल बन कर** फैलती हैं और **जल, ज्योति की भाँति** जगमगाता है

जहाँ पर **उजाला आवाज बनकर** फैलता है और

रंग-बिरंगी रंगीनियाँ संगीत बनकर उछलती हैं

जहाँ पर **लेसर किरणें लयबद्ध नर्तन** करती हैं और

चट्टानें पिघलकर कलकल प्रवाह करने लगती हैं

जहाँ पर **प्राचीन ज्ञान का प्रकाश** अर्वाचीन **सितारों को जगमगा** देता है

जहाँ **विज्ञान** और **अध्यात्म** में मित्रता स्थापित होती है

समय रुक जाता है...**मन के द्वार** खुल जाते हैं...

और

हजारों वर्ष पूर्व की प्राचीन भारतीय **उपनिषद** की महान सत्यकथा जीवंत बनती है

और अज्ञात **आध्यात्मिक रहस्यों की पगदंडी खुल जाती है...**

समयावधि : 45 मिनट
समय : हर शाम सूर्यास्त के बाद (सोमवार को छोडकर)